नवपाषाण काल - एक अवधारणा एवं विकास का प्रक्रम

* डा0 मंजू सिंह

मानव की तकनीकी प्रगति की कहानी का सुदीर्घ इतिहास है। मानव समुदाय द्वारा किये तकनीकी के आधार पर मानव अतीत के अवशेषों को कुछ हद तक कालक्रमानुसार व्यवस्थित करने का प्रथम प्रयास सी0जे0 थामसन द्वारा किया गया। थामसन महादेव ने 1812 ई0 में पुरावशेषों को तकनीकि आधार पर पाषाण, ताम्र–कांस्य तथा लौह कालों में विभाजित किया था। इसे थामसन की 'त्रियुगीन पद्धति' के नाम से जाना जाता है। थामसन के समय से उपर्युक्त शब्द पुरातत्व में सामान्य रूप में प्रयोग किये जाते हैं। आगे चलकर सन् 1865 ई0 में सर जॉन लुब्बाक महोदय ने थामसन के पाषाण युग को उपकरणों के वैशिष्ट्य के आधार पर दो भागों– पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल में विभाजित किया। तब से लेकर प्रागितिहास के वैज्ञानिक विषय के रूप में स्थापित हो जाने तक सम्पूर्ण मानवता के विकास में विभिन्न सांस्कृतिक अवस्थाओं की पहचान के लिए दोनों शब्द प्रयोग में लाये जाते रहे हैं।

सर जॉन लुब्बाक महोदय ने अपनी पुस्तक 'प्रीहिस्टारिक टाइम्स' के प्रथम संस्करण में पुरा पाषाण काल एवं नव पाषाण काल के अन्तर को दर्शाते हुए निम्नलिखित बातें कहीं:– उनके अनुसार पुरा पाषाण काल का सम्बन्ध जीव–जन्तुओं से था जो अब विलुप्त हो गये हैं। इसके विपरीत नव पाषाण काल का सम्बन्ध आधुनिक जीव–जन्तुओं से स्थापित किया। उनके अनुसार पुरा पाषाण युगीन उपकरण फलकीकरण विधि से बनाये जाते थे जबकि नवपाषाण युगीन उपकरणों को अभीष्ट आकार देने के लिए फलकीकरण के पश्चात् गढ़ना, घिसना तथा चमकाना होता था। इसके अतिरिक्त पुरा पाषाणिक जीवन जहां एक ओर फल–फूल एवं कन्द–मूल आदि के संग्रह तथा जंगली पशुओं के शिकार पर प्रधान रूपेण आधारित था,

* प्रवक्ता (इतिहास) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल (एम0पी0)

वहीं दूसरी ओर नव पाषाण काल का आर्थिक जीवन खाद्यान्नों के उत्पादन एवं पशु–पालन की अर्थव्यवथा पर आधारित था।

सर जॉन लुब्बाक द्वारा प्रस्तावित उपर्युक्त परिभाषा में अनुसंधानों एवं खोजों के फलस्वरूप प्राप्त नवीन जानकारी के परिप्रेक्ष्य में यथेष्ठ परिष्कार तथा परिवर्धन किये गए। 'नवपाषाण' शब्द अब अनेकार्थक हो गया है। ऐसी स्थिति में इसका ठीक–ठीक अर्थ बता पाना कठिन हो गया है।

जहां एक ओर सर जॉन लुब्बाक, वर्गेस तथा उनके सहयोगी संपूर्ण मानवता के विकास को दर्शाने के लिये पुरा पाषाण काल तथा नव पाषाण काल का प्रयोग कर रहे थे वहीं दूसरी ओर स्वेन निल्सन महोदय ने मानव –विकास का एक आर्थिक माडल प्रस्तुत किया जो विभिन्न आर्थिक अवस्थाओं पर आधारित था। इन अवस्थाओं को स्वेन महोदय ने बर्बर, यायावर, कृषिक तथा सभ्यता का नाम दिया। इसी प्रकार का प्रयास क्रमिक विकासवादी मानवशास्त्री एडवर्ड टेलर द्वारा किया गया। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जीवन की कहानी को बर्बरता, क्रूरता (असभ्यता) तथा सभ्यता में विभाजित किया। टेलर के अनुसार असभ्यता संस्कृति की उस अवस्था को प्रदर्शित करती है जिसका विकास कृषि के साथ हुआ। इस प्रकार विकासवादी मानव शास्त्रियों की यह अवस्था तत्कालीन प्राक् इतिहासकारों के नव पाषाण काल की समकालीन हो गयी।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि , ' नवपाषाण' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सर जॉन लुब्बाक महोदय द्वारा अपनी पुस्तक 'प्री हिस्टारिक टाइम्स' में 1865 ई0 में किया गया। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग उत्तर पाषाण अवस्था के लिये किया था। जिसमें पाषाण उपकरणों को अधिक दक्षता के साथ बनाया जाता था, उनके स्वरूप में भिन्नता होती थी तथा वे पॉलिशदार होते थे। स्पष्टतया इस नयी धारणा को आधार पाषाण–उपकरणों का स्वरूप तथा उनको बनाने की विधि थी। जो पुरा पाषाण काल से भिन्न थी। इस मानक में 1926 ई0 में जाकर प्राक–इतिहास की पुस्तकों में नवपाषाण काल का महत्वपूर्ण लक्षण निर्धारित किया। बर्किट

महोदय ने नव पाषाण काल की निम्नलिखित चार विशेषताओं की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया–

1. कृषि का प्रयोग
2. पशुपालन
3. मिट्टी के बर्तनों का निर्माण
4. पाषाण उपकरणों की घिसावट तथा पालिश।

प्रागितिहास के क्षेत्र में हुए हाल के अनुसंधानों ने यह प्रदर्शित किया है कि पहले के दो लक्षण किसी भी ऐतिहासिक समाज को' नवपाषाण काल' नाम से सम्बोधित करने के लिये प्रमाणिक माने जा सकते हैं। परन्तु कई प्राक– मृदभाण्ड तथा खाद्योत्पादक संस्कृतियों की खोज ने पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया है कि बर्तनों का निर्माण नव पाषाणकाल का प्रतीक नहीं रह गया है। इसी प्रकार पाषाण–कुल्हाड़ियों के निर्माण की तकनीक भी विशिष्ट रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इधर यूनान, टर्की, ईरान आदि क्षेत्रों से प्रथम कृषक संस्कृति से सम्बन्धित कुछ ऐसे पुरास्थल प्रकाश में आये हैं जहां से नवपाषाणिक कुल्हाड़ियां नहीं प्राप्त हुई हैं। इस स्थिति ने विद्वानों के बीच एक नये विमर्श को जन्म दिया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि पाषाण युगीन कुल्हाड़ियां संस्कृति को 'प्रथम कृषक संस्कृति' (Early Farming Culture) नाम देना ज्यादा समीचीन है। ज्यादातर पुराविदों ने इस विचारधारा का समर्थन किया है।

नवपाषाणिक अवधारणा के अन्य पहलुओं पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। खाद्य–संग्राहक अवस्था का खाद्योत्पादक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन का मानव इतिहास पर बहुत गहरा और व्यापक प्रभाव था। चाइल्ड महोदय ने इसे 'नवपाषाणिक क्रान्ति' की संज्ञा प्रदान की। किन्तु चाइल्ड द्वारा प्रयोग किये गये 'क्रान्ति' शब्द की कई विद्वानों द्वारा आलोचना की गई। उनका कहना था कि खाद्य संग्रह से खाद्य उत्पादन के परिवर्तन विकासवादी थे न कि क्रान्तिक। चाइल्ड महोदय ने स्वयं अपने तर्क का समर्थन अग्रलिखित शब्दों में किया, 'क्रान्ति शब्द का अर्थ निश्चित रूप से

एक आकस्मिक और उग्र घटना के रूप में नहीं लेना चाहिए। यहां इसका प्रयोग आर्थिक ढाँचे और उन समुदायों के सामाजिक संगठनों के विकासवादी परिवर्तन के उच्चतम बिन्दु के लिए किया गया हैं जो कि जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न हुए थे।

पालतू पशुओं और पौधों की प्रथम जाति किसी एक विशेष क्षेत्र या किसी एक समय बिन्दु पर दृष्टिगोचर नहीं होती है। बल्कि विभिन्न क्षेत्रों तथा अनेक समयों में दिखायी पड़ती हैं। चाइल्ड महोदय ने अतिशीघ्र अनुभव किया कि पश्चिमी एशिया में मनुष्य मुख्य रूप से दो अनाजों, गेहूँ और जौ की खेती करता था, क्योंकि ये दो अनाज अन्य अनाजों की तुलना में अधिक लाभदायक थे। इसी प्रकार चाइल्ड ने यह भी अनुभव किया कि भोजन के लिए रखे जाने वाले पशुओं के प्रकार भी अधिक नहीं थे। मुख्य रूप से गाय–बैल, भेड़, बकरियाँ तथा सुअर पाले जाते थे। ये दोनों ही निरूपण पश्चिमी एशिया के प्राक इतिहास में हुए नवीन अनुसंधानों द्वारा प्रमाणित होते हैं। किन्तु पालतू पशुओं के संदर्भ में उनकी ' ओएसिस थियरी' प्राप्त नवीन आंकड़ो से पुष्ट नहीं होती। चाइल्ड का विश्वास था कि प्रारम्भिक होलोसीन के दौरान नियर–ईस्ट की जलवायु क्रमिक रूप से शुष्कतर होती गयी जिसने पशुओं को पालतू बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। परन्तु यह मान्यता आधुनिक अनुसंधानकर्ताओं द्वारा पुष्ट नहीं होती। कार्ल डब्ल्यू0 बट्जर एक शीर्ष पुरा जलवायु वैज्ञानिक का मत था कि नियर–ईस्ट में जलवायु सम्बन्धी अनेक उतार–चढ़ाव थे। उन्होंने इन उतार–चढ़ावों की अनेक अवस्थाओं का विवेचन किया है।

नवपाषाणिक क्रान्ति छः जंगली पौधों और पशुओ को पालतू बनाने पर आधारित थी जिनमें गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी, सुअर तथा मवेशियों के पूर्वजों का नाम लिया जा सकता है। इस क्रान्ति का कारण क्या था? चाइल्ड जलवायु में स्थिरता और 'ओएसिस थ्योरी ' में विश्वास करते थे। किन्तु यह सिद्धान्त नियर–ईस्ट की पुरा जलवायु में हुए नवीन अध्ययनों से मेल नहीं खाता है। दूसरे, ब्रेडवुड ऊँचे शिखरों तथा अन्तर पर्वतीय घाटियों कि

'नेचुरल हैविटेट जोन' में विश्वास करते थे। उनका मत था कि प्रारम्भिक सम्भावित पौधों का समूह तथा पालतू पशु अन्तपर्वतीय घाटियों में उपस्थित थे। लेकिन अनेक नये स्थलों की खोज जैसे– अलीखास, गंजरेह, वैधा और रामद इत्यादि जो प्रारम्भिक डोमेस्टिकेशन के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं इस जोन के बाहर स्थित हैं। अतः ब्रेड वुड की 'नेचुरल हैबिटेट जोन' की परिभाषा में सुधार आवश्यक है।

यह संतोष का विषय है कि इधर कुछ अंतरविषयी अनुसंधानों के अलोक में नियर–ईस्ट के प्रागितिहास पर कुछ नवीन प्रकाश पड़ने की सम्भावना है। आकड़ो में सुधार लाने की 'वाटरसीविंग' जैसी नयी विधियां सफलतापूर्वक डेविड फ्रेन्च द्वारा हसन झील में प्रयुक्त की गयी है। ऐसी आशा की जाती है कि यह नूतन विधि भविष्य में पश्चिम एशिया में सम्पन्न होने वाली खुदाइयों में प्रयुक्त की जायेगी। इसी प्रकार हेन्स हेलवेक ने वाओन्स तकनीक विकसित कर पदार्थों के नमूनों से पौधों के अवशेषों को अलग करने की विधि को विकसित किया है। ऐसी आशा की जाती है कि प्रागितिहासविदों के बीच आयी नयी चेतना तथा प्राकृतिक विज्ञान के सहयोग से नियर–ईस्ट के प्रागितिहासिक पर नया प्रकाश पड़ेगा।

प्रस्तुत विनिवन्ध पश्चिमी एशिया की प्राथमिक ग्राम्य संस्कृतियों के अध्ययन पर पूर्णतया अवलम्बित है। 'नियोलिथिक' शब्द एक व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता रहा। यद्यपि ब्रेडवुड जैसे विद्वान इस शब्दावली के प्रयोग से असहमत रहे हैं। किन्तु उनके द्वारा प्रस्तुत शब्दावली भी पूरी तरह उपयुक्त तथा संशयविहीन नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिये हमारे पास वर्तमान में आंकड़ों का अभाव है। इसलिये हमें प्रागितिहास में कुछ और अनुसंधानों के लिये इंतजार करना होगा तभी कोई उपयुक्त शब्दावली को अविष्कृत किया जा सकता है। इस प्रकार ' नियोलिथिक शब्द को यहां पर समझना काफी कठिन है। यद्यपि खाद्योत्पादन एक विशेष मानक है जिसके द्वारा नव पाषाण काल को व्याख्यायित किया जा सकता है।

नव पाषाणिक सांस्कृतिक विकास क्रम का जो रूप नियर–ईस्ट

क्षेत्र में प्रदर्शित किया गया है, उसे हम पूर्णतः विन्ध्य क्षेत्र तथा गंगा घाटी में लागू नहीं कर सकते। क्योंकि इनके भौगोलिक और जलवायु सम्बन्धी परिवेश में अंतर है। लेकिन यह विवरण सामान्य रूप से स्थायी कृषि तथा पशुपालनपरक सांस्कृतिक अवस्था के आविर्भाव के स्वरूप पर प्रकाश डालता है।

संदर्भ –

1. डेनियल, ग्लिन, पूर्वोक्त, 1962, पृ0 66
2. बर्किट, एम0सी0, 1926 अवर अर्ली ऐन्सस्टर्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, पृ013
3. बट्जर, कार्ल डब्लू0, इनवाइरनमेंट एण्ड आर्क्यालॉजी, आल्डिन पब्लिशिंग कार्पोरेशन, शिकागो, 1965, पृ0 33
4. डेनियल, ग्लिन, द आइडिया ऑफ प्रीहिस्ट्री, सी0ए0 वाट्स एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1962
5. वीवर, एम0ई0, अ न्यू वाटर सेपरेशन फॉर स्वायल फ्राम आर्क्यालॉजिकल एक्सेवेशन्स, अनातोलियन स्टडी, अंक 21, 1971, पृ0 65–66
6. चाइल्ड गार्डन 1957 ह्वाट हैपेन्ड इन हिस्ट्री, मिडिलसेक्स, पृ0 49